ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-12 No.03 December 2020

निराला का काव्य

सपना रानी
पी.एच.डी. शोधार्थी जम्मू विश्वविद्यालय

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 1899 ई. में बंगाल के महिषादल राज्य में हुआ। यदि उनके व्यक्तिगत जीवन के विषय में बात की जाए तो उनका जीवन बड़ा ही दुःखद रहा है। इनके पिता का असामयिक निधन होता है और युवावस्था में ही पत्नी का निधन भी इनके जीवन को कष्टमय बना देता है। छायावादी काव्य में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। छायावादी युग हिन्दी काव्य जगत में स्वर्ण युग माना जाता है। छायावाद के समय में काव्य की जो बंधी-बंधाई परिपाटी चली आ रही थी उसमें परिवर्तन आया।

''छायावादी काव्य अपने पूर्ववर्ती काव्यों की अपेक्षा नवीनता और समकालीनता की ओर उन्मुख है। इसमें अमूर्त उपमानों बिम्बों, प्रतीकों और नवीन भाषा-भंगिमा का सहारा लिया गया है।''[1]

छायावाद की समयावधि हिन्दी काव्य जगत में बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। निराला इस युग के चार स्तम्बों में से एक थे। मानव की परतंत्रता और पीढ़ी के प्रति आक्रोश उनके काव्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। असमानता और अन्याय के प्रति आक्रोश भी उनके काव्य में स्पष्ट झलकता है। हिन्दी कविता में स्वच्छन्द छन्द रचना का सूत्रपात निराला के द्वारा ही किया गया। उनके जीवन की विषम परिस्थितियों के कारण उनके जीवन को विरोको का सामंजस्य भी कहा जाता है। निराला जीवन भर विषमताओं से जूझते रहते हैं और आत्मग्लानिवश कहते हैं-

''दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।''[2]

अपनी कविता 'बादल राग' में वह बादलों से प्रार्थना करते हैं कि वह भारत के गरीब किसानों की पुकार सुनकर विपल्व मचाने के लिए आएँ-

''हंसते हैं छोटे पौधे लघु भार
शस्य अपार,
हिल-हिल, खिल-खिल
हाथ हिलाते, तुझे बुलाते।
विपल्व-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।''[3]

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-12 No.03 December 2020

निराला ने बादल को क्रांति और विद्रोह का प्रतीक माना है। वह क्रांति से निम्न एवं दलितवर्ग के लोगों को उनके अधिकार दिलाना चाहते हैं। निराला की इस प्रकार की बातों से स्पष्ट है कि वह समाज में उपस्थित विषमता को समाप्त कर समानता लाना चाहते हैं।

निराला को बचपन से ही कठोर अनुशासन की यातना सहनी पड़ती है फिर माता, पत्नी और पुत्री की असमयिक मृत्यु के अघात के कारण तथा अपने जीवन के अभावों के कारण ही वह निष्ठावान, दृढ़ संकल्पी तथा कर्मठ व्यक्तित्व वाले बनते हैं। अपने जीवन में बार-बार हार का सामना करने पर और अपने जीवन की विषमताओं जिनका सामना उन्हें साहित्य के क्षेत्र में करना पड़ा हो उनसे वह अपने मार्ग से डगमगाए नहीं बल्कि निरन्तर आगे ही बढ़ते रहे और विद्रोह का रास्ता अपनाते रहे। निराला ने अपने काव्य में प्रत्येक पक्ष को एक नये ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने मानव जीवन से जुड़े हर एक यथार्थ को अपने काव्य का हिस्सा बनाया चाहे वह प्रगतिवादी चेतना हो या राष्ट्रीय भावना, प्रकृति और मानवीयता की भावना सब कुछ उनके काव्य में देखने को मिलता है।

अपनी प्रकृति और रचना दृष्टि के प्रति वे सचेत और सजग हैं। 'जागे फिर एक बार' कविता निराला जी का एक नवजागरण गीत है जिसमें उन्होंने अन्याय और दासता के विरुद्ध आवाज़ उठाकर उसे समाप्त कर मुक्ति पाने की इच्छा जागृत की है। यह उनकी एक ऐसी कविता है जिसमें प्रकृति और ऐतिहासिक सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने जनता को जागृत कर उनमें आत्मविश्वास जगाने का प्रयत्न किया है। हजारों वर्षों से आलस्य को अपनाए हुए जनमानस को जगाने के लिए वे कहते हैं-

''शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार।''[4]

निराला देशवासियों को अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज़ उठाने को ललकारते हैं। राष्ट्रीयता का संबंध राष्ट्र प्रेम से है जिसमें व्यक्ति अपने देश से विशेष लगाव रखता है। ''वह जन समुदाय जिसका एक सामान्य भाषा साहित्य, सामान्य संस्कृति, एक जाति, विदेशियों से सहज पार्थवय की भावना, आर्थिक जीवन व्यवस्था, मनः संरचनात्मक धारणा, एक शासन तन्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की अकांक्षा, एक सामान्य धर्म और राजनीतिक रूप संघठित, एक भौतिक इकाई हो।''[5] निराला के काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर प्रत्येक स्थान पर पाए जाते हैं।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-12 No.03 December 2020

निराला के समय चारों ओर अंग्रेजों की हकुमत थी ऐसी परिस्थितियों में जनता को जागृत करने और देश प्रेम जगाने के लिए एक कवि ही राष्ट्रीय चेतना को अपने काव्य के माध्यम से प्रकट कर सकता है।

''जागो फिर एक बार!
प्यार से जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण पंख तरूण किरण, खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार।''[6]

इस प्रकार निराला नवयुवकों में चेतना भरते हुए जागरूक होने को कहते हैं कि संघर्ष करो और बन्धनों को तोड़ने के लिए प्रयत्नशील रहो। वे कहते हैं कि आकाश के तारे भी तुम्हें जगाते हुए हार मान गये हैं, अब भोर हो गई है और तुम्हें जागना ही होगा।

'तोड़ती पत्थर' कविता निराला की प्रगतिवादी कविता है। यह मजदूर वर्ग की दयनीय दशा को उभारने वाली एक मार्मिक कविता है। इसमें महिला मजदूर की दुर्दशा का चित्रण है।

''कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रह-मन,
गुरू हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार-
सामने तरू-मालिका अट्टालिका प्राकार।''[7]

'जूही की कली' निराला की प्रथम रचना मानी जाती है। निराला सजग नारी का समर्थन करते हैं जो उनकी इस कविता के माध्यम से भी स्पष्ट हो जाता है-

''विजन-वन वल्लरी पर, सोती थी सुहागभरी-
स्नेह-स्वप्न-मग्न-अमल, कोमल-तनु तरणी
जूही की कली,
वृग बन्द किये, शिथिल, पत्रांक में।
वासन्ती निशा थी,
विरह विधुर प्रिया-संग छोड़
किसी दूर-देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।''[8]

Copyright @ 2020 Authors

प्रस्तुत पंक्तियों में निराला ने प्रकृति का खूबसूरत मानवीकरण किया है। 'राम की शक्तिपूजा' निराला की लम्बी कविता है। चूंकि यह एक कथात्मक कविता है इसलिए संश्लिष्ट होने के बावजूद भी इसकी संरचना अपेक्षाकृत सरल है। निराला की इस कविता पर वाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस से अधिक कृतिवासी रामायण का प्रभाव देखा जा सकता है परन्तु, कृतिवासी रामायण और राम की शक्तिपूजा में पर्याप्त भेद है। कृतिवासी में कथा पौराणिकता से युक्त होकर आर्य की भूमि पर सपाटता रखती है। राम की शक्तिपूजा की कथा आधुनिकता से युक्त होकर अर्थ की कई भूमियों को स्पर्श करती है। इस कविता में निराला ने आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल पर व युगीन चेतना का अत्यन्त प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है।

''रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा
अमर रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण शरविधृतक्षिप्रकर, वेगप्रखर,
शतशेल सम्वरणशील, नील नभगर्जित स्वर।''[9]

'कुकुरमुत्ता' निराला की हास्यव्यंग्य मूलक रचना है इसमें निराला ने पूँजीपतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। यह केवल पूँजीपतियों एवं सर्वहारा के मध्य के द्वन्द्व को ही उजागर नहीं करती बल्कि अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने वाली कविता है-

''अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा तूने खाद्य का अशीष्ट,
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।''[10]

इस प्रकार निराला पूँजीपतियों पर व्यंग्य करते हैं और गुलाब को शोषक वर्ग के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

'सरोज स्मृति' निराला की लम्बी कविता एवं शोकगीत है जिसे उन्होंने अपनी पुत्री सरोज के निधन के बाद उसकी स्मृति में लिखा। इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन की छाया को भी देखा जा सकता है।

''उन विंश पर जो प्रथम चरण,
तेरा वह जीवन-सिन्धु-तरण,
तनये, ली कर दृकपात तरूण
जन्म से जन्म की विदा अरूण।''[11]

अतः कहा जा सकता है कि निराला ने मानव जीवन के हर पक्ष को अपने काव्य के माध्यम से उजागर किया है। निराला के काव्य में उनके अपने व्यक्तित्व के अनुरूप

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-12 No.03 December 2020

विभिन्न विरोधी विषयों का समावेश हुआ है। ओज और करूणा, प्रेम और निर्वेद, विनय और विद्रोह, स्वच्छन्दता और भक्ति, हास्य और गंभीरता जैसी परस्पर विरोधी प्रवृतियों का समन्वय उनमें देखने को मिलता है।

संदर्भ :-

1. डा. भगवानदास यादव, निराला काव्य का वस्तुत्व, कानपुर: साहित्य रत्नाल्लय 1979, पृ. 47
2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', (बादल राग) अनामिका काव्य,
3. डा. रामविलास शर्मा, राम विराग, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 91
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अपरा, इलाहाबाद: भारती भण्डार 1971, पृ. 18-19
5. डा. भगवानदास यादव, निराला काव्य का वस्तुत्व, कानपुर: साहित्य रत्नाल्लय 1979, पृ. 57
6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अपरा, इलाहाबाद: भारती भण्डार 1971,
7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अनामिका 1938
8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', परिमल
9. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अनामिका 1938
10. डा. रामविलास शर्मा, राम विराग, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन,
11. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सरोज स्मृति

Copyright @ 2020 Authors